

Prepared by

Dr. Md.Haider Ali, Assistant Professor

Dept.of History, R.B.G. R. College

Maharajganj, JPU, Chapra

Question: The discuss the role of Extremists (Garam Dal,1906-19) in the Indian National Movement

Ans. 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर कांग्रेस के **उदारवादी दल** के हाथ में थी. 1905 ई. से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है, जिसे **उग्रवादी युग** (*garam dal*) की संज्ञा दी गई है. जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद का वरदान मानने वाले तथा उनकी न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखनेवाले उदारवादी नेताओं का विश्वास टूटकर बिखर गया तब कांग्रेस में एक नए तरुण वे का उदय हुआ जो प्रार्थना के बदले संघर्ष का मार्ग अपनाने को आतुर था. उग्रवादी दल के नेताओं में प्रमुख थे - **बाल गंगाधर तिलक**, लाल लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल (**बाल-लाल-पाल**) एवं अरविन्द घोष. गरम दल (*garam dal*) के इन नेताओं का मानना था कि सरकार पर दबाव डालकर ही अधिकारों को पाया जा सकता है. **कांग्रेस** के अन्दर अब युवा वर्ग की संख्या बढ़ने लगी थी जो जल्द से जल्द **स्वराज्य** और स्वतंत्रता चाहता था. कांग्रेस के दो दल हो गए - एक शांतिमय ढंग से सरकार का सक्रीय विरोध करना चाहता था और दूसरा क्रांति का मार्ग अपनाना चाहता था.

उग्रवादी सरकार के सुधारों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे. वे जितना सरकार का विरोध करते थे उतना ही उदारवादियों के विचार का भी विरोध करते थे. गरम दल (*garam dal*) के अग्रदूत ब्रिटिश शासन को वरदान के बदले अभिशाप मानते थे. उनके कार्यक्रम में बहिष्कार तथा स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा को विशेष महत्त्व दिया गया था. उनका कहना था कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे प्राप्त करना कांग्रेस का लक्ष्य. हम स्वतंत्रता और न्याय चाहते हैं, दया की भीख नहीं. उग्रवादी स्वराज्य का वास्तविक/सार्थक स्वतंत्रता मानते थे. उग्रवादी प्रजातंत्र **संविधान** और प्रगति के साथ-साथ राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार विस्तृत बनाना चाहते थे. उन्हीं के प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप निम्न मध्यम वर्ग राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश कर पाए. गरम दल (*garam dal*) के नेताओं ने जनसाधारण को राष्ट्रीयता और राजनीति का पाठ पढ़ाने के लिए विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ किया. इस प्रकार उग्रवाद भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की महत्वपूर्ण इकाई बन गया.

उग्रवादी तथा क्रांतिकारी आन्दोलन (1906-1919 ई.) के कारण

उग्रवाद के उदय के कारण

राजनीतिक कारण -

आर्थिक कारण

धार्मिक तथा सामाजिक कारण

उग्रवादियों के उद्देश्य

उग्रवादी आन्दोलन की प्रगति

उग्रवाद के उदय के कारण

राजनीतिक कारण -

1. **सरकार द्वारा कांग्रेस की मांगों की उपेक्षा करना** - 1892 ई. के भारतीय परिषद् अधिनियम द्वारा जो भी सुधार किये गये थे, अपर्याप्त एवं निराशाजनक थे। लाला लाजपत राय ने कहा , 'भारतीयों को अब भिखारी बने रहने में ही संतोष नहीं करना चाहिए और न उन्हें अंग्रेजों की कृपा पाने के लिये गिड़गिड़ाना चाहिए।' इस प्रकार इस समय के महान उग्रवादी नेताओं (लाल, बाल एवं पाल) को उदारवादियों को भिक्षावृत्ति की नीति में एकदम विश्वास नहीं रहा। उन्होंने निश्चय किया कि स्वराज्य की प्राप्ति रक्त और शस्त्र से ही संभव हैं
2. **ब्रिटिश सरकार की भारतीयों के प्रति दमनकारी नीति** - 1892 से 1906 ई. तक ब्रिटेन में अनुदार दल सत्तारूढ़ रहा। यह दल अत्यंत ही प्रतिक्रियावादी था। 1897 ई. में श्री तिलक को राजद्रोह के अपराध में कैद कर लिया गया और उन्हें 18 महीने का कठोर कारावास दिया गया। श्री तिलक की गिरफ्तारी से सारा देश रो पड़ा सरकार के क्रूर कृत्यों से सारे देश में क्रोध एवं प्रतिशोध की भावना उमड़ पड़ी।

आर्थिक कारण

1. **दुर्भिक्ष एवं प्लेग का प्रकोप** - 1876 से 1900 ई. तक देश के विभिन्न भागों में 18 बार दुर्भिक्ष आ पड़ा। 1896-97 ई० में बंबई में सबसे भयंकर अकाल पड़ा लगभग दो करोड़ लोग इसके शिकार हुए । सरकार अकाल पीड़ितों की सहायता करने में असमर्थ रही। अतः भारतीयों ने यह निश्चय किया कि उन्हें ब्रिटिश सरकार का अंत करना ही है चाहें इसके लिये उन्हें हिंसात्मक साधनों का सहारा ही क्यों न लेना पड़े ? अभी अकाल

का घाव भरा भी नहीं था कि बंबई प्रेसीडेंसी में 1897-98 ई. में प्लेग का प्रकापे छा गया। पूना के आसपास भयंकर प्लेग फैला जिसमें लगभग 1 लाख 73 हजार व्यक्तियों को प्राण गंवाने पड़े। सरकार के द्वारा प्लेग की रोक-थाम के लिये जो साधन अपनाये गये इससे जनता में बड़ा असंतोष छा गया।

2. **ब्रिटिश सरकार की पक्षपात पूर्ण कर व्यवस्था** - सरकार की आर्थिक नीति का मुख्य उद्देश्य अंग्रेज व्यापारियों तथा उद्योग पतियों का हित साधन था, न कि भारतीयों का। कपास पर आयात कर बढ़ाया गया तथा भारतीय मिलों से तैयार किये हुए माल पर उत्पादन कर लगाया गया जिसके फलस्वरूप विदेशी माल सस्ता रहा और भारतीय कपड़ा उद्योग को बड़ी हानि पहुंची। सरकार की आर्थिक नीति के विरुद्ध भारतीयों में असंतोष छा गया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना आरंभ कर दिया।

धार्मिक तथा सामाजिक कारण

1. **भारतीयों में जागृति** - 19 वीं शताब्दी में स्वामी विवेकानन्द, लाले मान्य तिलक, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष इत्यादि ने प्राचीन भारतीय धर्म एवं संस्कृति को श्रेष्ठ बताकर भारतीय युवकों में आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न की। पुनरूत्थानवादी नेता धर्म की ओट में उग्र राष्ट्रीयता का प्रचार करने लगे। विपिनचन्द्र पाल ने काली एवं दुर्गा का आह्वान कर बताया कि “स्वतंत्रता हमारे जीवन का ध्येय है एवं इसकी प्राप्ति हिन्दू धर्म से ही संभव है।”
2. **भारतीयों के साथ विदेश में अभद्र व्यवहार** - विदेशों में भी भारतीयों के साथ अभद्र एवं अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था। अंग्रेज भारतीयों को काला आदमी समझते थे एवं उनको घृणा की दृष्टि से देखते थे। अंग्रेजी समाचार पत्र जातिभेद का तीव्र प्रचार कर रहे थे। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के साथ तिरस्कारपूर्ण और निन्दनीय व्यवहार किया जाता था। उन्हें मकान बनाने, संपत्ति खरीदने एवं रेलवे के ऊँचे दर्जे में यात्रा करने का अधिकार न था।
3. **लार्ड कर्जन की निरंकुशतापूर्ण प्रशासनिक नीति** - लार्ड कर्जन की स्वेच्छाचारिता तथा निरंकुशता ने भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रवाद के जन्म को अवश्यंभावी कर दिया। उसने भारतीयों की भावनाओं पर बिल्कुल ध्यान न दिया।
4. **पाश्चात्य क्रांतिकारी सिद्धान्तों का प्रभाव** - भारतीय नवयुवकों के विचार एवं दृष्टिकोण को परिवर्तित करने में पश्चिमी देशों के क्रांतिकारी सिद्धान्तों का जबर्दस्त हाथ

रहा। फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमरीका के राष्ट्रीय आन्दोलनों में क्रांतिकारी विचारों को जगा दिया तथा इन देशों में स्वतंत्रता संग्राम की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल संवैधानिक मांग से ही साम्राज्यवाद से मुक्ति नहीं मिल सकती है।

उग्रवादियों के उद्देश्य

उग्रवादियों का उद्देश्य स्वराज्य प्राप्त करना था। उनके अग्रणी नेता तिलक कहा करते थे, “स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।” अरविन्द घोष ने भी कहा था, “स्वराज्य हमारे जीवन का लक्ष्य है और हिन्दू धर्म के माध्यम से ही इसकी पूर्ति संभव है।” इस प्रकार, उग्रवादी स्वतंत्रता के महान पुजारी थे। पूर्णतया राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के समर्थक थे तथा इंग्लैण्ड से संबंध विच्छेद चाहते थे।

उग्रवादी आन्दोलन की प्रगति

कांग्रेस दो गुटों में बंट गई नरम दल एवं गरम दल। नरम दल के प्रमुख नेता गोपाल कृष्ण गोखले, फीरोजशाह मेहता एवं सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। गरम दल के प्रमुख नेता बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपतराय थे जो लाल-बाल-पाल के नाम से विख्यात थे। दाने ों गुटों के बीच पहली बार 1905 ईके बनारस अधिवेशन में खुला संघर्ष हुआ। कांग्रेस के युवक वर्ग के लाल-बाल-पाल के नेतृत्व में विद्रोह का झंडा खड़ा किया। कांग्रेस के पंडाल में उग्रवादियों की पृथक बैठक हुई और अनाधिकारिक रूप से उग्रवादी दल का जन्म हुआ। उग्रवादियों के प्रभावस्वरूप इस अधिवेशन में राजनीतिक सुधारों की मांग की गई। कांग्रेस की राजनीतिक भिक्षावृत्ति की नीति पर गहरा प्रहार किया गया और यह प्रहार भविष्य में और भी प्रबलतम होता गया।

1906 ई० के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने नरम दल और गरम दल के मध्य कांग्रेस में फूट उत्पन्न होने से रोकें उन्होंने अध्यक्षपद से कांग्रेस का लक्ष्य ‘स्वराज्य’ घोषित किया साथ ही स्वराज्य, स्वदेशी आन्दोलन, विदेशी बहिष्कार और राष्ट्रीय भिक्षा के समर्थन में प्रस्ताव पास किये गये। उससे उग्रवादियों को काफी संतोष हुआ तथा कांग्रेस में एकता बनी रही।

कांग्रेस का अगला अधिवेशन 1907 ई. में सूरत में हुआ। इस अधिवेशन में स्वराज्य के अर्थ तथा उसकी प्राप्ति के साधनों के प्रश्न पर नरम और गरम दलों में फटू

काफी गहरी हो गई। अध्यक्ष पद के लिये पुनः मतभेद हुआ। उग्रवादी लोकमान्य तिलक को इस अधिवेशन का सभापति बनाना चाहते थे, परन्तु उदारवादियों ने बहुमत द्वारा डॉ. रासबिहारी घोष को सभापति निर्वाचित किया। फलतः अध्यक्ष भाषण के पूर्व ही हो-हल्ला आरंभ हो गया तथा शोर-गुल के बीच अधिवेशन को स्थगित कर देना पड़ा। तत्पश्चात् सूरत अधिवेशन में उदारवादी बहुमत में थे। अतः इनकी एक अलग सभा हुई। इनकी समिति ने कांग्रेस का विधान तैयार किया। विधान की प्रथम धारा में कांग्रेस की नीति का स्पष्टीकरण किया गया जिसका पालन प्रत्येक कांग्रेसी के लिये आवश्यक बताया गया। इस धारा में कहा गया कि “भारत की जनता को उसी प्रकार की शासन व्यवस्था प्राप्त हो, जिस प्रकार की शासन व्यवस्था ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य उपनिवेशों में प्रचलित है और उनके समान ही भारतवासी भी साम्राज्य के अधिकारों और उत्तरदायित्वों के भागी बने। यही भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्य हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति वर्तमान शासन व्यवस्था में धीरे-धीरे सुधार का राष्ट्रीय एकता तथा जनोत्साह को बढ़ावा देकर और देश के मानसिक नैतिक, आर्थिक एवं औद्योगिक साधनों को सुसंगठित कर वैधानिक रीति से की जाए।”

उग्रवादी कांग्रेस की इस नरम नीति के बिल्कुल विरुद्ध थे। अतः वे कांग्रेस से अलग हो गये। दोनों दल अगले 9 वर्षों तक पृथक् रूप से कार्य करते रहें।